वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 138 | शुक्रवार 15 सितम्बर 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन

हिंदी एक भाषा नहीं, बल्कि देश के सम्मान और संस्कृति की प्रतीक है -शिक्षा मंत्री

जयपुर. कासं

भाषा एवं पुस्तकालय विभाग की ओर से राज्य स्तरीय हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन गुरुवार को बिड़ला सभागार में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री डॉ. बुलाकीदास कल्ला ने हिंदी दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हिंदी एक भाषा नहीं, बल्कि देश के सम्मान और संस्कृति की प्रतीक है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय भाषा की विरासत को बचाये रखना और बढ़ाना हर भारतीय की जिम्मेदारी है। हिंदी भाषा सभी भारतीयों को जोड़ने की एक मजबूत कड़ी है। उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी हिंदी माध्यम की पुस्तकें होनी चाहिए , इसके लिए उन्होंने सभी विद्यार्थियों और लेखकों से अनुरोध किया वे हिंदी भाषा में हर विषय पर पुस्तकें लिखें। इस अवसर पर भाषा एवं पुस्तकालय विभाग राज्यमंत्री राजेन्द्र यादव ने कहा कि आज आधुनिक तकनीकी दौर में हमें एक बार फिर से हिन्दी के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है। उन्होंने हिन्दी के विश्वव्यापी प्रसार की बात करते हुए कहा कि विदेशों में आज हिन्दी को अपनाया जा रहा है, जबकि हमारे अपने देश में कुछ लोग अंग्रेजी में संवाद करने में गर्व महसूस करते हैं। हमें यह मानसिकता बदलनी होगी। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि, शासन सचिव स्कूल शिक्षा, भाषा एवं पुस्तकालय विभाग नवीन जैन ने कहा कि आज विश्व में हिन्दी बोलने वालों की संख्या 60 करोड़ से भी अधिक है इसलिए भाषा एवं पुस्तकालय विभाग को महत्पूर्ण पुस्तकों का हिंदी अनुवाद उपलब्ध कराना चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के निदेशक एवं प्रखर गांधी विचारक डॉ. कुमार प्रशान्त ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए महात्मा गांधी के योगदान के बारे में बताते हुए कहा कि गाँधीजी ने पूरे देश को हिन्दी से जोड़ने के लिए अथक प्रयास किए हैं। गाँधीजी ने आजादी की लड़ाई के लिए अपनी स्वयं की एक भाषा के रूप में हिन्दी को ही एकमात्र आधार माना था। निदेशक सोविला माथुर ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए विभागीय गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया।

मुख्यमंत्री गहलोत से कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री की शिष्टाचार भेंट

जयपुर. कासं। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से गुरुवार को कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने मुख्यमंत्री निवास पर शिष्टाचार भेंट की। इनके साथ विधायक एन.ए. हारिस भी उपस्थित थे। इस दौरान शिवकुमार ने राजस्थान सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं और चहुंमुखी विकास के लिए सराहना की। उन्होंने कहा कि महंगाई राहत कैम्प, स्वास्थ्य का अधिकार, गिग वर्कर्स एक्ट, मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना, 500 रुपए में गैस सिलेंडर, अन्नपूर्णा फूड पैकेट सहित विभिन्न योजनाओं की चर्चा पूरे देश में है। उन्होंने कोटा शहर के नवनिर्मित चम्बल रिवर फ्रंट और ऑक्सीजोन सिटी पार्क के लिए भी तारीफ की।

राज्यपाल ने सांगानेर एयरपोर्ट पर उपराष्ट्रपति की अगवानी की

जयपुर. कासं। राज्यपाल कलराज मिश्र ने उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के सपत्नीक जयपुर पहुंचने पर गुरुवार प्रातः सांगानेर एयरपोर्ट पर उनकी भावभीनी अगवानी की। राज्यपाल ने बुके भेंट कर उनका स्वागत किया।

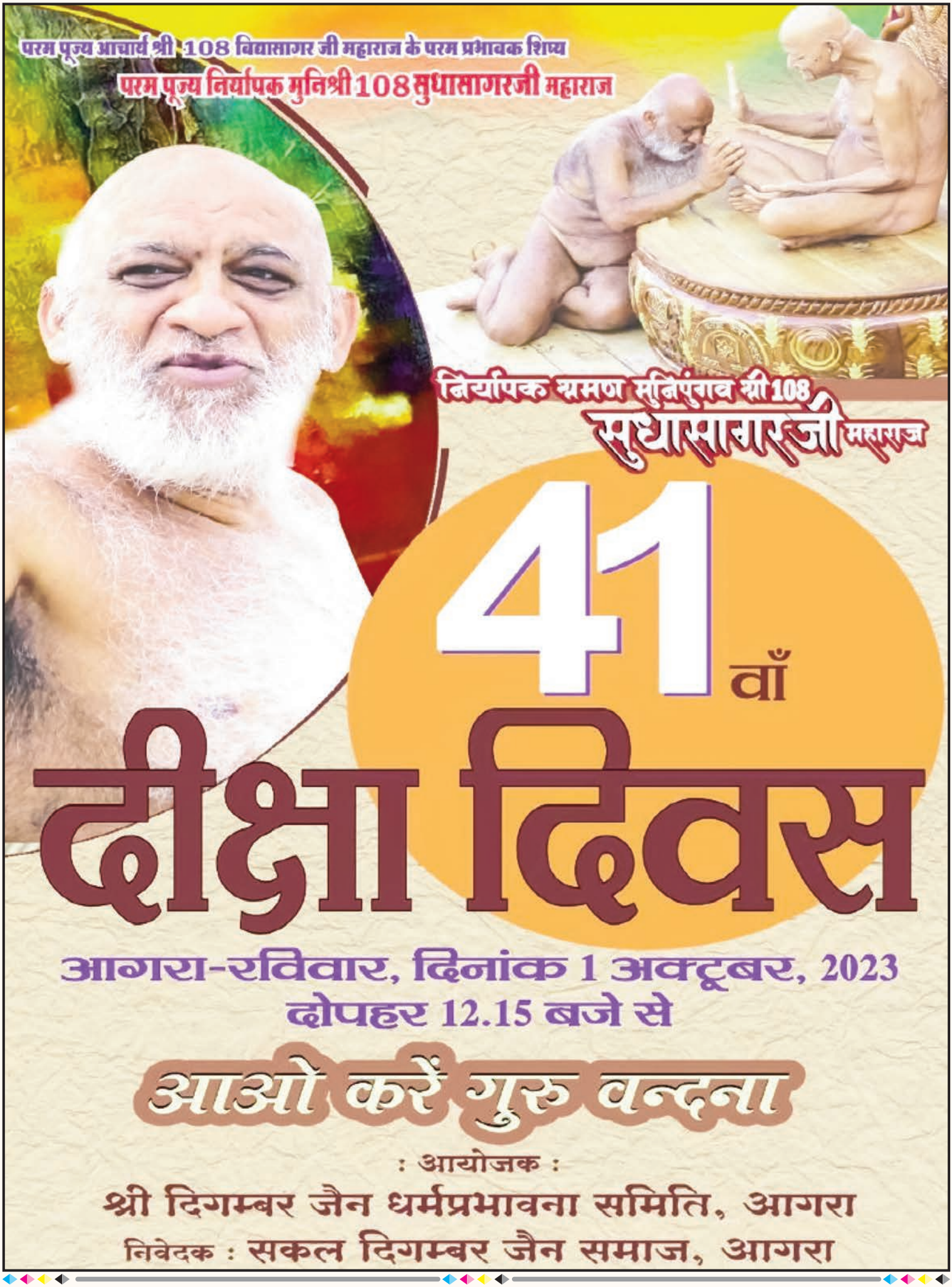
परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य
परम पूज्य निर्यापक मुनिश्री 108 सुधासागरजी महाराज
निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री 108
सुधासागरजी महाराज
41 वाँ
दीक्षा दिवस
आगरा-रविवार, दिनांक 1 अक्टूबर, 2023
दोपहर 12.15 बजे से
आओ करें गुरु वन्दना
: आयोजक :
श्री दिगम्बर जैन धर्मप्रभावना समिति, आगरा
निवेदक : सकल दिगम्बर जैन समाज, आगरा

श्रावक संस्कार शिविरों के जनक परम पूज्य तीर्थचक्रवर्ती जगतपूज्य
निर्यापक श्रमण मुनिपुंगवश्री 108 सुधासागर जी महाराज
क्षुल्लक गौरव श्री 105 गंभीर सागर जी महाराज
के मंगल सानिध्य में आगरा की पुण्य धरा पर

30 वां श्रावक शिविर संस्कार

आगरा–दिनांक 19 से 29 सितम्बर 2023 तक

– शिविर आयोजक स्थल–
श्री महावीर दिगम्बर जैन इण्टर कॉलेज परिसर, हरीपर्वत, आगरा (उ.प्र.)

शिविर पुण्यार्जक

श्रावक श्रेष्ठी श्री निर्मल-उर्मिला, वीरेंद्र-उषा रेखा
रजत-आयुषी, रौनक-अदिति,
बिभोर विन्नी हर्षिल द्रव्या जियांशी मोठ्या परिवार

श्रावक श्रेष्ठी श्री हीरालाल-वीना,
दिवाय-कोमल, उत्कर्ष दिविषा काव्या
अर्हम बैनाडा परिवार

श्रावक श्रेष्ठी श्री राजेश-रजनी,
निखिल-पूजा, शोभित-आरती,
कनिष्का हर्नीशा, आध्या सेठी परिवार

श्रावक संस्कार शिविर
निर्देशक
हुकम जैन 'काका'
94141-84618
निर्देशक
दिनेश गंगवाल
93145-07802

सुधा अमृत वर्षायोग–2023, आगरा

जगत पूज्य निर्यापक श्रमण मुनिपुंगवश्री 108 सुधासागर जी महाराज का
41वां मुनि दीक्षा दिवस समारोह अश्विन वदी तृतीया
दिनांक 01 अक्टूबर 2023 को दोपहर 12:15 से मनाया जायेगा।

शिविर आयोजक:- श्री दिगम्बर जैन धर्म प्रभावना समिति, आगरा (उ.प्र.)

वेद ज्ञान

सच्चा अध्यात्म

जिस अध्यात्म से मनुष्य के मन को शांति मिले, वही सच्चा अध्यात्म है। मन की प्रसन्नता का हमारी शारीरिक सेहत से सीधा संबंध है। हम मानसिक तौर पर खुश रहते हैं तो हमारा शरीर भी स्वस्थ रहता है। इसलिए मनुष्य शरीरिक रूप से कितना ही कमजोर क्यों न हो, लेकिन उसे मानसिक रूप से परिपक्व होना चाहिए। मानसिक प्रसन्नता हमें आशावादी बनाती है और आशा हमें लक्ष्य के करीब लाती है। जब हमारे सपने मरते हैं तो जीवन के प्रति हमारा उत्साह-उमंग भी खत्म होने लगता है। फिर हमें कोई भी चीज अच्छी नहीं लगती और हम जीते जी अपने को मृत मान लेते हैं। हमें सोचना चाहिए कि जब हम अच्छा करेंगे तो अच्छा अनुभव होगा और जब हम कुछ गलत करेंगे तो उसका अनुभव बुरा ही होगा। जैसे व्यवहार की अपेक्षा हम दूसरों से करते हैं वैसा ही व्यवहार हमें भी दूसरों से करना चाहिए। स्वामी विवेकानंद के मुताबिक जो आत्मा मेरे भीतर है, वही तुम्हारे भीतर भी है और हर आत्मा में परमात्मा का वास है। हर आत्मा परमात्मा का मंदिर है। हर व्यक्ति को अपने अंदर ईश्वर की खोज करनी चाहिए, ऐसा करने से मनुष्य बुराइयों से अपने आप ऊपर उठ जाता है। जब मनुष्य अपने भीतर संतोष भाव जाग्रत करता है तो फिर उसे किसी अध्यात्म की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि तब उसे स्वतः ही प्रत्येक वस्तु और अवस्था में अध्यात्म प्राप्त हो जाता है। संतोष से बड़ा कोई धर्म नहीं है और असंतोषी के लिए कोई धर्म नहीं है। असंतोषी व्यक्ति को कितना ही क्यों न मिल जाए उसे हर चीज कम ही लगती है और उसे लगता है कि उसके साथ अन्याय हो रहा है। इसके विपरीत संतोषी व्यक्ति अपने परिश्रम से जितना प्राप्त करता है उसे ईश्वर का प्रसाद मानकर खुशी-खुशी ग्रहण करता है। मनुष्य के भीतर संतोष भाव पैदा हो इसलिए कहा गया है कि दोनों हाथों से कमाओ और सौ हाथों से लुटाओ। हर व्यक्ति का यह दायित्व है कि वह इस संसार को उतना तो अवश्य लौटा दे जितना उसने इससे लिया है। दूसरों के लिए जिया गया जीवन ही सच्चा जीवन है और यही मनुष्य के लिए सच्चा अध्यात्म भी है। कोई भी धर्म या अध्यात्म मनुष्य से बड़ा नहीं हो सकता है।

संपादकीय

भ्रष्टाचार पर रियायत देने के मूड में नहीं अब न्यायालय!

सर्वोच्च न्यायालय ने भ्रष्ट अधिकारियों पर शिकंजा थोड़ा और कस दिया है। अदालत की संविधान पीठ ने व्यवस्था दी है कि भ्रष्टाचार के मामले में संयुक्त सचिव और उससे ऊपर के अधिकारियों की गिरफ्तारी में संबंधित प्राधिकार से अनुमति लेने की कोई जरूरत नहीं है और यह नियम 2003 से पहले के मामलों पर भी लागू होगा। यानी दिल्ली विशेष पुलिस स्थापना (डीएसपीई) अधिनियम का कोई मतलब नहीं है। दरअसल, डीएसपीई अधिनियम में व्यवस्था दी गई थी कि केंद्र सरकार में संयुक्त सचिव या उससे ऊपर के अधिकारियों की गिरफ्तारी से पहले संबंधित प्राधिकार से अनुमति लेनी होगी। मगर सीबीआइ ने 2004 में दिल्ली के मुख्य जिला चिकित्सा अधिकारी को भ्रष्टाचार के मामले में गिरफ्तार कर लिया था। तब उन्होंने डीएसपीई अधिनियम के तहत राहत की गुहार लगाई थी। उसके बाद इस अधिनियम के औचित्य की समीक्षा करते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने 2014 में इस अधिनियम को ही रद्द कर दिया था। फिर यह सवाल उठा कि इस फैसले से पहले के लंबित मुकदमों के बारे में क्या नियम लागू होगा। उसी पर संविधान पीठ ने फैसला दिया है कि 2014 का फैसला इसके पहले के मामलों पर भी लागू होगा। इससे एक बार फिर जाहिर हुआ है कि अदालत भ्रष्टाचार के मामलों में किसी तरह की रियायत की पक्षधर नहीं है। दरअसल, डीएसपीई अधिनियम बना था तो उसके पीछे मकसद यही था कि किसी अधिकारी के गिरफ्तार होने की वजह से संबंधित महकमे का कामकाज बाधित न होने पाए। संयुक्त सचिव और उसके ऊपर के पदों का निर्वाह कर रहे अधिकारियों को अनेक गंभीर और जरूरी मामलों में तत्काल फैसले करने पड़ते हैं। अगर उन्हें अचानक गिरफ्तार कर लिया जाता है तो अनेक परियोजनाएं और दूसरे कामकाज ठप पड़ सकते हैं। इसलिए इस मामले में संबंधित प्राधिकार यानी मंत्रालय से गिरफ्तारी की अनुमति लेने को अनिवार्य किया गया। मगर यह अधिनियम एक तरह से अधिकारियों के लिए कवच साबित हुआ। जांच एजंसियों के पास पुख्ता सबूत होने के बावजूद वे किसी भ्रष्ट अधिकारी को तब तक गिरफ्तार नहीं कर सकती थीं, जब तक उन्हें संबंधित विभाग से अनुमति नहीं मिल जाती। फिर यह छिपी बात नहीं है कि इन ऊंचे ओहदों पर पहुंचे लोगों के अपने बड़े अधिकारियों, मंत्रियों आदि से कैसे रिश्ते होते हैं। इस तरह कई अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई में लंबा समय खिंच जाता था। तब तक मामले से संबंधित सबूतों के साथ छेड़छाड़ की आशंका भी बनी रहती थी। ऐसे में सर्वोच्च न्यायालय ने डीएसपीई को अप्रासंगिक माना था। भ्रष्टाचार के मामलों में जांच एजंसियों के सामने सबसे बड़ी अड़चन यही आती है कि रसूखदार और सत्तापक्ष से जुड़े लोगों के खिलाफ जांच और कार्रवाई करने में कई तरह की इजाजत लेनी पड़ती है। मंत्रालयों में बैठे अधिकारी कई बार मंत्रियों के पसंदीदा और भरोसेमंद होते हैं, इसलिए कुछ मंत्री उनके खिलाफ कार्रवाई की इजाजत देने से बचते रहते हैं। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

आफत की बारिश

उत्तर प्रदेश में लौटते मानसून की वजह से हुई बारिश ने जैसे हालात पैदा कर दिए हैं, उससे फिर यही पता चलता है कि वक्त के मद्देनजर पूर्व तैयारी, सावधानी और दूरदर्शिता के अभाव का खमियाजा आखिरकार आम लोगों को भुगतना पड़ता है। पिछले तीन दिनों की बारिश के चलते राज्य के कई जिलों में बाढ़ जैसी स्थिति पैदा हो गई और व्यापक पैमाने पर जनजीवन बाधित हुआ है। ज्यादा दुखद यह है कि लगातार बरसात ने कई जगहों पर घरों को कमजोर कर दिया और दीवार गिरने से उन्नीस लोगों की जान चली गई। इसमें बारिश के दौरान वज्रपात की चपेट में आने से भी कई लोग मारे गए। सही है कि यह स्थिति एक प्राकृतिक आपदा के रूप में सामने आई है, लेकिन अगर वक्त और मौसम को ध्यान में रखते हुए समय रहते जरूरी कदम उठाए जाएं, तो शायद ज्यादा बड़ी तबाही से बचा जा सकता है। लखनऊ में हालत यह है कि सबसे सुव्यवस्थित कहे जाने वाले इलाकों में भी दो-तीन फुट पानी भर गया। इससे दूसरे इलाकों की मुश्किल का अंदाजा लगाया जा सकता है। बारिश मौसम का एक चक्र है, लेकिन अगर किसी सुव्यवस्थित इलाके में भी बाढ़ और जल जमाव की वजह से सब कुछ ठहर जाए, तो क्या यह व्यवस्था की नाकामी का उदाहरण नहीं है? हर मौसम का अपना निर्धारित चक्र है, पर विडंबना है कि न तो आम लोग मौसम का रूप बिगड़ने को ध्यान में रख कर अपने स्तर पर तैयारी करते हैं और न ही सरकारें समय रहते उचित व्यवस्था करती हैं। अगर सिर्फ इतने भर का ध्यान रखा जाए कि प्रकृति कभी भी भयावह रुख अख्तियार कर सकती है और इसके मद्देनजर बचाव और राहत के इंतजाम तैयार रहें तो जानमाल के व्यापक नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। मगर आमतौर पर यही देखा जाता है कि जब तक कोई मौसम आपदा का रूप लेकर संकट नहीं बन जाता, तब तक लोग बचने की कोशिश नहीं करते। दूसरी ओर, सरकार भी तभी राहत पहुंचाने और दूसरे कदम उठाती है, जब हालात काबू से बाहर हो जाते हैं। उत्तर प्रदेश में इस बार लगातार भारी बारिश के बारे में मौसम वैज्ञानिकों का मानना है कि इसकी जड़ में बंगाल की खाड़ी में बनने वाला चक्रवात है और अगले कुछ दिन और ऐसी ही स्थिति कायम रहने वाली है। ऐसा अक्सर होता है जब इस बारे में अनुमान आधारित आकलन जारी किए जाते हैं और स्थिति बिगड़ने की भी आशंका जताई जाती है। इसके अलावा, मौसम की अनिश्चितता को ध्यान में रख कर सरकारों को अपने स्तर पर भी बचाव के इंतजाम से लेकर बरसात और बिजली गिरने को लेकर आम लोगों को सावधानी बरतने के लिए जागरूक करने की जरूरत होती है। मगर बरसात से पैदा हालात यह बताने के लिए काफी हैं कि अव्यवस्था के प्रति लापरवाही किस हद तक कायम रहती है। आखिर इंसानी रिहाइश के सभी इलाकों में जल-निकासी की ऐसी व्यवस्था क्यों नहीं की जाती कि बारिश का स्तर चाहे जो हो, किसी भी गली या सड़क पर जल जमाव न हो। सरकार और संबंधित महकमे की नींद तभी क्यों खुलती है, जब मौसम की वजह से विकट स्थिति पैदा हो जाती है। यह बेवजह नहीं है कि कई बार बेकाबू हो जाने के बाद हालात को संभालना भी मुश्किल हो जाता है और नाहक ही लोगों की जान चली जाती है।

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम

जयपुर. शाबाश इंडिया। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद मानसरोवर संभाग जयपुर के अध्यक्ष अशोक बिंदायका (जोला वाले) महामंत्री पारस जैन बोहरा (दुदू वाले) ने बताया की श्री वरुण पथ दिगंबर जैन मंदिर मे दशलक्षण महापर्व पर दिनांक 22.09.2023 शुक्रवार को शाम 8.30 बजे प्रश्नोंत्तरी कार्यक्रम किया जायेगा ' सभी विजेताओं को युवा परिषद द्वारा पुरस्कार दिया जायेगा ' कार्यक्रम के मुख्य अतिथि परिषद के परम शिरोमणि सरक्षक राजीव जैन, सतीश कासलीवाल होंगे ' कार्यक्रम की सयोजिका श्रीमती मंजू कासलीवाल पिंकी कासलीवाल, लक्ष्मी बिंदायका, अंजू जैन, गरिमा जैन, रुचि सेठी, कामिनी जैन होगी ।

तेरापंथ समाज बारडोली द्वारा पर्युषण पर्व आराधना के अंतर्गत अभिनव सामयिक कार्यक्रम आयोजित किया गया

मोक्ष प्राप्त करने का श्रेष्ठ पर्व सामयिकः साध्वी श्री सोमयशा जी

सूरत. शाबाश इंडिया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवा परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद बारडोली द्वारा जैनियों के प्रमुख पर्व पर्युषण महापर्व के तीसरे दिन अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया। आचार्य महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वीश्री सोमयशा जी आदि ठाणा-4 के मार्गदर्शन में लगभग 275 सामयिक का आयोजन हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता एवं परिषद के अध्यक्ष संजय बडोला की अध्यक्षता में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की सभी 358 शाखाएँ प्रतिवर्ष पर्युषण महापर्व के दौरान देशभर में अभिनव सामायिक का आयोजन करती हैं। साध्वीश्री प्रदीप प्रभाजी ने अभिनव सामयिक प्रयोग कराते हुए कहा कि जैन धर्म में सामयिक का विशेष महत्व माना जाता है। साध्वी श्री सरल यशाजी ने कहा कि सामायिक को समता के अध्ययन और आत्मा की शुद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण उपक्रम बताया गया है। सामायिक में व्यक्ति 48 मिनट के लिए सभी सांसारिक गतिविधियों को त्याग देता है और खुद को आध्यात्मिक अभ्यास में लीन कर देता है। मंत्री राहुल सामरा ने कहा कि तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें आचार्य श्री महाश्रमणजी के निदेर्शानुसार हमारा संगठन समाज में आध्यात्मिक विकास के लिए समय-समय पर ऐसे कार्य करता रहेगा।

सीकरी जैन मंदिर में दशलक्षण पर्व की तैयारियां शुरू, युवाओं ने किया परिमार्जन

सीकरी. शाबाश इंडिया। जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व की तैयारियां शुरू हो गई है। गुरूवार को अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद् द्वारा जैन मंदिर में प्रतिमाओं का परिमार्जन व मंदिर परिसर की साफ सफाई की गई। इस मौके पर समाज के सभी बड़े बुजुर्ग, पुरुष व बच्चें भी उपस्थित रहे। युवा परिषद् के अध्यक्ष पुष्पेन्द्र जैन ने बताया कि जैन धर्म के दशलक्षण महापर्व 19 सितंबर से 28 सितंबर तक बड़े धूमधाम से मनाएं जाएंगे। इस अवसर युवाओं द्वारा प्रतिदिन मंदिर जी में सांस्कृतिक कार्यक्रम व प्रतियोगिताएं आयोजित होगी।

पर्यूषण आत्मा की सुरक्षा जीवन की रक्षा का पर्व है : महासती धर्मप्रभा

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया

चैन्नई। पयूर्षण आत्मा की सुरक्षा जीवन की रक्षा का पर्व है। गुरूवार साहूकार पेठ पयूर्षण के तृतीय दिवस महासती धर्मप्रभा ने पयूर्षण मे जप, तप करने वाले सभी श्रध्दांलूओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह महापर्व आत्मिक उज्ज्वलता का पर्व है।और हमारी आत्मा के अवलोकन का दिन है, भीतर में झांकने का पर्व है। इस मे संसार मे हमारी आत्मा ने अनंत बार अनेक जीव योनियों मे जन्म लेकर भी आत्मा मुक्ति का मार्ग नहीं प्राप्त कर पाई है। पयूर्षण पर्व हमारी आत्मा को भीतर की ओर मुड़कर देखने की बात सिखाता है जब तक हम अंतर की गहराई से स्वंय को जानेगे नही तब हमारी आत्मा को पहचान नहीं सकते है पर्यूषण ही एक ऐसा पर्व है जो हमारी सोई हुई आत्मा को जगाता है और हमे अहसास दिलाता है संसारा असार है और मोह का माया जाल है। हम बार सुख की खोज कर रहे है जबकि सुख हमारे भीतर मे छुपा हुआ है। निस्वार्थ होकर हम तप तप और परमात्मा की उपासना और आराधना करते है और अपनी गलतियां की पुनारवर्ती नहीं दोहरायें तो हम अपनी इस आत्मा संसार पर भ्रमण से मुक्ति दिला लेगें। साध्वी स्नेहप्रभा ने अंतकृतदशा सूत्र का वांचन करते हुए कहा कि पयूर्षण पर्व साधना की वो कसौटी है जिससे इंसान अपने मानव को सार्थक बना सकता है। जीवन मे सुखो को भोग करके भी अपनी इस आत्मा को मुक्ति दिला सकता है। साहूकार पेठ श्री संघ के कार्याध्यक्ष महावीर चन्द सिसोदिया ने बताया की पयूर्षण के तीसरें दिन चैन्नई महानगर के अनेक उपनगरों के श्रावक श्राविकाओं की उपस्थिति रही इस दौरान अनेक बहनो और भाईयो ने 6 उपवास पांच, तीन और दो उपवास के साध्वी धर्मप्रभा से प्रत्याख्यान लिए थे।

समाधि दिवस (भाद्र शुक्ला दोज) पर विशेष

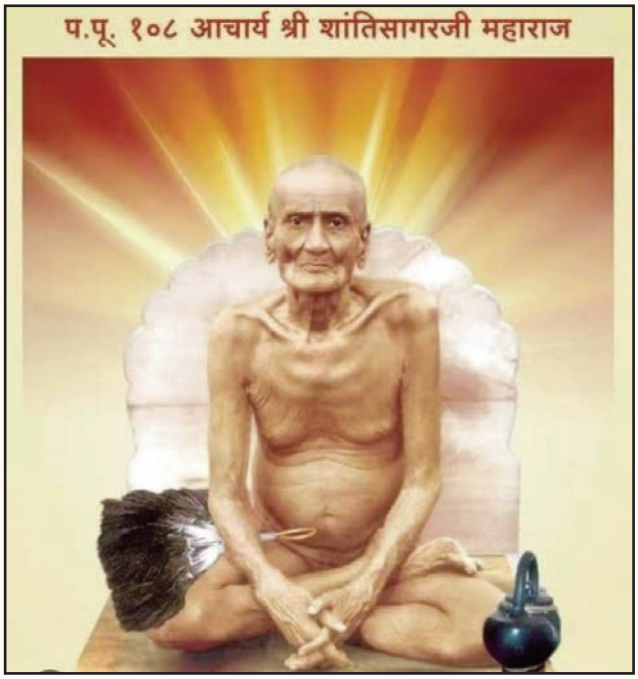

दक्षिण भारत में जन्मे सन्त शान्ति सागर ने उत्तर भारत में दिगम्बरत्व की जगायी अलख

जैन धर्म के प्रथम दिगम्बर आचार्य युग प्रवर्तक श्री शांतिसागर जी महामुनिराज (1872-1955)

"शांति के स्वरूप रूप ,आतम अनूप भूप जात रूप धार कियो,आतम उद्धार हैं । हित मित भाषी प्रिय,धर्म के प्रकाशी हियपाप के विनाशी लिए,महाव्रत धार हैं ।।"

दिगंबर जैन धर्म के 20वीं सदी में पहले आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज ने उत्तर भारत में पारंपरिक दिगम्बर प्रथाओं के शिक्षण और अभ्यास को पुनर्जीवित किया। देवप्पा (देवकीर्ति) स्वामी जी द्वारा उन्हें संघ में क्षुल्लक के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था। उन्होंने तीर्थंकर नेमिनाथ की प्रतिमा के समक्ष अपनी ऐलक दीक्षा (धार्मिक प्रतिज्ञा) ली। लगभग 1920 में, शांतिसागर जी जैन धर्म के दिगंबर संप्रदाय के पूर्ण दिगम्बर मुनि बन गए। 1922 में, कर्नाटक के बेलगाम जिले के यरनाल गाँव में, उन्हें ''शांति सागर जी'' नाम दिया गया।

नाना के घर में हुआ जन्म

आचार्य शांति सागर का जन्म नाना के घर आषाढ़ कृष्णा 6, विक्रम संवत 1929 सन 1872 बुधवार की रात्रि में शुभ लक्षणों से युक्त बालक सातगौड़ा का दक्षिण भारत के यालागुडा गाँव (भोज), कर्नाटक में हुआ था। उनके पिता का नाम भीमगौडा पाटिल और माता का नाम सत्यवती था। नौ वर्ष की आयु में इच्छा के विरुद्ध इनकी शादी कर दी गयी थी। जिनसे शादी करी गयी थी, उनकी 6 माह पश्चात ही मृत्यु हो गयी थी।

चारित्र चक्रवर्ती का अलंकरण

दिगम्बर साधु सन्त परम्परा में वर्तमान युग में अनेक तपस्वी, ज्ञानी ध्यानी सन्त हुए। उनमें आचार्य शान्तिसागरजी महाराज एक ऐसे प्रमुख साधु श्रेष्ठ तपस्वी रत्न हुए हैं, जिनकी अगाध विद्वता, कठोर तपश्चर्या, प्रगाढ़ धर्म श्रद्धा, आदर्श चरित्र और अनुपम त्याग ने धर्म की यथार्थ ज्योति प्रज्वलित की । आपके इन सब गुणों ने ही आपको चारित्र चक्रवर्ती का सम्मान दिया। आपने लुप्तप्राय, शिथिलाचारग्रस्त मुनि परम्परा का पुनरुद्धार कर उसे जीवन्त किया, यह निग्रन्थ श्रमण परम्परा आपकी ही कृपा से अनवरत रूप से आज तक प्रवाहमान है।

सल्लेखना में ही बनाया उत्तराधिकारी

जीवन पर्यन्त मुनिचर्या का निर्दोष पालन करते हुए 84 वर्ष की आयु में दृष्टि मंद होने के कारण सल्लेखना की भावना से आचार्य श्री सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरी जी पहुँचे। वहाँ पर उन्होंने 13 जून को विशाल धर्मसभा के मध्य आपने सल्लेखना धारण करने के विचारों को अभिव्यक्त किया। 15 अगस्त को महाराज ने आठ दिन की नियम-सल्लेखना का व्रत लिया जिसमें केवल पानी लेने की छूट रखी। 17 अगस्त को उन्होंने यम सल्लेखना या समाधिमरण की घोषणा की तथा 24 अगस्त को अपना आचार्य पद अपने प्रमुख शिष्य श्री 108 वीरसागर जी महाराज को प्रदान कर घोषणा पत्र लिखवाकर जयपुर (जहाँ मुनिराज विराजमान थे) पहुँचाया। आचार्य श्री ने 36 दिन की सल्लेखना में केवल 12 दिन जल ग्रहण किया।

युग प्रवर्तक की समाधि

18 सितम्बर 1955 को प्रातः 6.50 पर भाद्र शुक्ला दोज रविवार को ॐ सिद्धोऽहं का ध्यान करते हुए युगप्रवर्तक आचार्य श्री शान्तिसागर जी ने नश्वर देह का त्याग कर दिया। संयम-पथ पर कदम रखते ही आपके जीवन में अनके उपसर्ग आये जिन्हें समता पूर्वक सहन करते हुए आपने शान्तिसागर नाम को सार्थक किया।

आलेख : पदम जैन बिलाला

अपने आपको पहचानें तभी राहत मिलेगी : गुरु माँ विज्ञाश्री माताजी

गुंसी, निवाई. शाबाशइंडिया। भारत गौरव गणिनी आर्यिका 105 विज्ञाश्री माताजी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि - जब बर्तन खराब होता है तो मांजकर साफ कर लेते हैं। चेहरा खराब होता है तो हम धोकर सही कर लेते हैं लेकिन आखिर कौनसा उपाय है जिससे कि हम अपने आपको सही कर लें । सबसे पहला कदम , सबसे पहला उपाय अपने आपको पहचान लें। मानव सारी दुनिया को जानता है पर खुद से अनजान है । खुद को जानने से ही जीवन में राहत मिलेगी । श्री दिगम्बर जैन सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुन्सी के तत्वावधान में शांतिनाथ भगवान की शांतिधारा करने भक्तों का मेला लगा था । मालपुरा , निवाई , कोटा , जयपुर से लोगों ने आकर भक्ति का आनन्द लिया । प्रथम शान्तिधारा करने का सौभाग्य पदमचंद टोंग्या निवाई वालों को प्राप्त हुआ । सोलहकारण व्रत की पूजन बड़े ही भक्तिभावों के साथ अरविंद ककोड़ एवं हितेश छाबडा निवाई ने सम्पन्न करायी। निवाई महिला मंडल ने गुरु माँ का उपवास के पश्चात का पारणा निर्विघ्न सम्पन्न कराया । आगामी 19 सितम्बर से दशलक्षण विधान में एक - एक पुण्यार्जक परिवार द्वारा विधान का आयोजन किया जायेगा ।

श्री मेवाड़ वागड़ प्रांतीय दिगम्बर जैन दसा नरसिंहपुरा महासभा का अधिवेशन सम्पन्न

सामाजिक कुरीतियों को प्रतिबंधित करने के निर्णय सर्वसम्मति से पारित। बसन्त पंचमी पर होगा सामुहिक विवाह का आयोजन

ऋषभदेव, उदयपुर. शाबाश इंडिया

श्री मेवाड़ वागड़ प्रांतीय दिगम्बर जैन दसा नरसिंहपुरा महासभा द्वारा स्वर्ण जयन्ती वर्ष के तहत जनरल महाअधिवेशन बाहुबली विहार उदयपुर में ऐतिहासिक सफलता के साथ आयोजित किया गया। महासभा अध्यक्ष लक्ष्मीलाल बोहरा ने बताया कि इस अधिवेशन में सम्पूर्ण 37 गांवों से महिला-पुरूष एवं युवक-युवतियों ने अपार संख्या में अपनी उपस्थिति दर्ज करातें हुए, इसे ऐतिहासिक बनाया। आयोजक समाज उदयपुर के अध्यक्ष सुमति प्रकाश वालावत ने बताया कि धार्मिक संस्कारों के साथ सर्व प्रथम ध्वजारोहण एवं पाण्डाल उद्घाटन कार्यक्रम हुआ। ध्वजारोहण निवर्तमान अध्यक्ष अशोक कुमार नश्नावत परिवार लोहारिया द्वारा किया गया एवं पाण्डाल उद्घाटन सभी पूर्व अध्यक्ष के करकमलों से सम्पन्न हुआ। समारोह में प्रथम बार सभी अतिथि महिलायें बनी, मुख्य अतिथि सरोज बोहरा उदयपुर, समारोह अध्यक्ष शकुन्तला कोठारी खैरवाडा, अतिविशिष्ठ अतिथि सागर देवी फान्दोत, विशिष्ठ अतिथि शशि देवी डवारा एवं श्रीमती धर्मिष्ठा लिखमावत थी। उदयपुर महामंत्री कचरूलाल जैन रामगढ ने बताया कि प्रथम सत्र में जनरल खुला अधिवेशन आयोजित हुआ जिसमें पूर्व एजेण्डा अनुसार सामाजिक कुरीतियों को बन्द करने हेतु बिन्दुवार चर्चा की गई जिसमें कई महिलाओं एंव युवको ने अपने विचार व्यक्त कियें कुरीतियों पर सर्व सम्मति से प्रतिबन्ध लगाते हुए, सभी उपस्थित जन समुदाय द्वारा संकल्प पत्र भर कर अनुमोदना की गई। प्री वेडिंग एंव प्रीशुट पर तुरन्त प्रभाव से प्रतिबन्ध रहेगा। महिला संगीत का भव्य स्टेज कार्यक्रम एवं कोरियोग्राफर न होकर सामान्य स्तर पर घर परिवार के साथ ही होगा। विजातीय एवं

अर्न्तजातीय विवाह पर अनुशासनात्मक कार्यवाही। विवाह विच्छेद तलाक के बढते प्रकरणों पर कमेटी गठित कर समझौते के प्रयास करने एंव मनोवैज्ञानिक तरीके से विशेषज्ञों द्वारा निःशुल्क काउन्सलिंग दिलाना। जो पक्ष दोषी है उस पर संविधान अनुसार कार्यवाही कर निलंबित करना। मृत्य भोज एवं इस अवसर पर बर्तन व लिफाफे भेट करने की प्रथा को पुनः कठोरता से लागु किया जायेंगा। प्रीतिभोज स्वरूचि भोज में भोजन अपव्यय को रोकने हेतु भोजन को सीमित करने हेतु स्थानीय समाजो को 30 दिन का समय देकर सुझाव मांगे गये। युवक-युवतियों के लिए चिन्तन शिविर व संस्कार शिविरों का अलग-अलग स्थानों पर आयोजन किया जायेगा। महामंत्री कचरूलाल जैन द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। द्वितीय सत्र के प्रारम्भ में मंचासिन अतिथियों का परिवार सहित स्वागत बहुमान किया गया। महासभा अध्यक्ष लक्ष्मीलाल बोहरा उदयपुर द्वारा स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए उपस्थित जनसमुदाय को बताया कि समाज में एकता लाने व विभिन्न अनावश्यक व्यय को सीमित करने के लिए एक ही उपाय है कि महासभा स्तर से सामुहिक विवाह कार्यक्रम पुनः प्रारम्भ किया जायें। इस हेतु मंच से घोषणा करते हुए कहां कि अभिजीत मुर्हत बसन्त पंचमी पर उदयपुर में विशाल स्तर पर सामुहिक विवाह का आयोजन किया जायेगा। युवा परिषद् के अध्यक्ष हितेष भंवरा ने बताया कि निवर्तमान महासभा , महिला परिषद् व युवा परिषद् के पदाधिकारियों का बहुमान कर भावभीनी विदाई देते हुए उनके द्वारा समाज को दियें गये समय हेतु आभार प्रदर्शित किया। तत्पश्चात शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें महासभा पदाधिकारियों को समारोह अध्यक्ष शकुन्तला कोठारी द्वारा, महिला परिषद् पदाधिकारियों को मुख्य अतिथि सरोज बोहरा द्वारा एवं युवा परिषद् पदाधिकारियों को उदयपुर अध्यक्ष सुमति प्रकाश वालावत द्वारा शपथ ग्रहण कराई गई। समारोह को संबोधित करते हुए समारोह अध्यक्ष श्रीमती शकुन्तला कोठारी ने उपस्थित महिलाओं से आह्वान किया की समाज में बदलाव महिला की जागरूता से ही आ सकते है। हम मातृ शक्ति को निश्चित रूप से समाज व देश के उत्थान के लिए कार्य करना है। महिला परिषद् अध्यक्ष लक्ष्मी देवी बोहरा एवं महामंत्री अनिता वणावत तथा युवा परिषद् अध्यक्ष हितेष भंवरा एवं महामंत्री रविन्द्र वोरा द्वारा समारोह को संबोधित किया गया। इस अवसर पर विशेष आमंत्रित वक्ता श्रीमती डॉ. कल्पना जैन प्रोफेसर मनोविज्ञान सुखाडिया विश्वविद्यालय द्वारा समारोह को संबोधित करते हुए बताया गया कि हमे समाज सुधार तथा युवक-युवतियों को मुख्य धारा में लाने, जैन संस्कृति अनुसार ढालने के लिए वैज्ञानिक तरीकों से समझाना होगा। उन्होने समाज के लिए एवं विवाह विच्छेद व पारिवारिक समस्याओ पर पुरी टीम द्वारा निःशुल्क सेवाएं देने की बात कही। आभार प्रदर्शन वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजमल कोठारी द्वारा किया गया। समारोह को भुपेन्द्र वालाावत, प्रदीप गनोडिया , चिराग कोठारी, वीर प्रकाश जैन, प्रकाश सिधंवी, रामेश चन्द्र केरोत, महामंत्री उदयपुर समाज, निवर्तमान अध्यक्ष अशोक कुमार नश्नावत लोहारिया , युवा परिषद् महामंत्री रविन्द्र वोरा, राजमल नायक, प्रकाश वणावत ने भी संबोधित किया।

'कुंजवान उदगांव' में पदम प्रभु भगवान के मंदिर का भूमि पूजन संपन्न

मन्दिर भगवान को धन्यवाद देने का पवित्र स्थान है : आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागर जी

औरंगाबाद/उदगाव. शाबाश इंडिया

भारत गौरव साधना महोदधि सिंह निष्क्रिड़ित व्रत कर्ता अन्तर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागर जी महाराज एवं सौम्यमूर्ति उपाध्याय 108 श्री पीयूष सागर जी महाराज ससंघ का महाराष्ट्र के ऊदगाव मे 2023 का ऐतिहासिक चौमासा चल रहा है। ''कुंजवान उदगांव'' में छठे तीर्थंकर पदम प्रभु भगवान के मंदिर का भूमि पूजन दिनाँक 13/9/2023 को अंतर्मना गुरुदेव के मंगलमय सानिध्य में संपन्न हुआ। गुरुदेव ने अपनी उपस्थिति में भूमि पूजन की समस्त क्रियाएं विधिवत रूप से संपन्न करवाई। इस अवसर पर गुरुदेव ने प्रवचन देते हुए बताया कि मन्दिर भगवान को धन्यवाद देने का पवित्र स्थान है.. लेकिन हमने उसे मांगने का कार्यालय बना दिया। आपने कभी ध्यान दिया हो - जब शादी होती है तो लड़का - लड़की की एक बार मांग भरता है और वह लड़की ज़िन्दगी भर पति से मांगती है। आदमी जीते जी औरत की मांग पूरी नहीं कर पाता। जब भी पुरूष घर जाता है तो पत्नी, पति से कहती है - अरे सुनो जी ! हमारी मांग पूरी करो, जब पति उसकी मांग पूरी नहीं कर पाता तो पत्नी कहती है - किसने कहा था मेरी मांग भरो - अब भरी है तो पूरी करो और आदमी जीते जी उसकी मांग पूरी नहीं कर पाता। सुख दुःख ओर कुछ नहीं सब मन का समीकरण है ।जब मन अच्छा होता है तो घर ही स्वर्ग सा लगने लगता है और जब मन दुखी, परेशान होता है तो घर से बड़ा नर्क ओर कहीं नहीं नजर आता।इसलिए हजारों प्रश्नों का एक ही समाधान है - मन। मानव का मन किसी प्रयोग शाला से कम नहीं है। आदमी का मन समुद्र की लहरों की तरह होता है, जिसमें इच्छायें लहरों की तरह नृत्य गान करती रहती है। मन चन्द्रमा की तरह घटता बढ़ता रहता है - कभी अच्छा, तो कभी बुरा सोचता रहता है, कभी सकारात्मक तो कभी नकारात्मक विचारों से भर देता है। आज के मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी है कि वह गलत जल्दी सोचने लगता है और वैसे भी आदमी अपनी औकात से ज्यादा सोचता है ।किसी विचारक ने क्या खूब लिखा -- हम मनुष्य है, इसलिए सोचते हैं, यदि गधे होते तो नहीं सोचते। आचार्यों ने मन के दस लक्षण बताये हैं, जिसमें उसे बन्दर सा चंचल और और अंगद के पैर सा अडिग बताया है। संसार के सारे संकल्प और विकल्प मन से ही संचालित होते हैं, इसलिए एक मन को साधो तो सब कुछ सहज हो जायेगा, अन्यथा यह मन जीना हराम कर देगा।

संकलन : नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल

आदिनाथ जैन मंदिर विवेक विहार में दश लक्षण पर्व पर होंगे भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

19 सितंबर से 28 सितंबर तक होने वाले 10 दिवसीय दस लक्षण महापर्व की तैयारी आदिनाथ जैन मंदिर विवेक विहार में प्रारंभ कर दी गई है दस लक्षण पर्व के संयोजक दीपक सेठी ने बताया कि 19 तारीख से शुरू होने वाले दस लक्षण पर्व मे इस बार आचार्य सुनील सागर जी महाराज के संघस्थ ब्रह्मचारिणी पूर्णिमा दीदी एवं जय श्री दीदी के निर्देशन में दस लक्षण महापर्व मनाया जाएगा एवं संगीतकार मनोज जैन एंड पार्टी,संजय जैन लाडनूं के सानिध्य में संगीतमय विधान पूजा एवं संगीतमय आरती का आयोजन किया जाएगा, एवं दस लक्षण पर्व के 10 दिनों में महिला मंडल के द्वारा सांस्कृतिक प्रोग्राम की प्रस्तुति दी जाएगी । समाज अध्यक्ष अनिल जैन (आईआरएस) ने बताया कि हम सब को सौहार्दपूर्ण वातावरण में दस लक्षण पर्व के कार्यक्रम को सफल बनाना है । दस लक्षण पर्व के दौरान समस्त पदाधिकारी, कार्यकारिणी के सदस्यगण, महिला मंडल टीम होने वाले कार्यक्रम में अपनी भागीदारी निभाएं । संयोजक दीपक सेठी ने 10 दिवसीय दस लक्षण पर्व में होने वाले कार्यक्रम की जानकारी दी । इस अवसर पर सचिव सुरेंद्र पाटनी, कोषाध्यक्ष पारस छाबडा, सहसचिव नरेश जैन मेड़ता, उपाध्यक्ष भागचंद पाटनी ,अरुण पाटनी, सुबोध पहाड़िया, नरेंद्र जैन निखार वाले ,महेश जैन कोटा, राजमती देवी पाटनी, मैना कासलीवाल, शशि जैन पूर्व डीवाईएसपी, अमित ठोलिया, पदमचंद जैन मंडावरी, मनोज कासलीवाल,अशीष शाह ,संजय पापड़ीवाल, मनोज कासलीवाल, अनिल पाटनी,महिला मंडल की अध्यक्ष सरला बगड़ा,सचिव अलका पांडया, महिला मंडल कोषाध्यक्ष सुनीता कासलीवाल , रिंकू सरावगी, रौनक बगड़ा सहित अन्य सदस्यगण उपस्थित रहे।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

भारतीय जैन मिलन
राजस्थान जैन ऑर्गेनाईजेशन
एवं
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा महासभा जिला जयपुर
नवकार किचन एण्ड इंटीरियर
द्वारा आयोजित
चित्रकला प्रतियोगिता

दिनांक: 17 सितम्बर, 2023 (रविवार)
समय: प्रात: 12.15 बजे से 2.15 बजे तक
स्थान: जयपुर शहर एवं आस-पास के जैन मन्दिर के प्रांगणों में

SUPPORTED BY kalaneri

प्रिय बन्धुओं, सादर जयजिनेन्द्र !
भारतीय जैन मिलन, राजस्थान जैन ऑर्गेनाईजेशन एवं श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा महासभा जिला जयपुर द्वारा 8 वर्षो से आयोजित अपार सफलता के बाद रविवार 17 सितम्बर, 2023 को जयपुर एवं आस-पास के विभिन्न जैन मंदिर के प्रांगणों में **नवकार किचन एण्ड इंटीरियर** स्तर पर आयोजन किया जा रहा है। जिसमें लगभग 4000 से 5000 पुरूष, महिलाएं एवं बालक-बालिकाओं के भाग लेने की संभावना है। जिसमें हमारे द्वारा दिये गये विषयों पर आप अपने हुनर को प्रदर्शित कर सकेंगे। आप सभी से अनुरोध है कि आप स्वयं भी प्रतियोगिता में भाग लेवें एवं बच्चों को प्रोत्साहित करें।

Participation Category Age Group (1) 8-13 Yrs. (2) 14-21 Yrs. (3) 22 Yrs. & Above

: विषय :
- बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
- चन्द्रयान सफलता का सफर
- दशलक्षण पर्व का महत्व
- आचार्य विद्यासागर महाराज जी की जीवन शैली
- 21वीं सदी का भारत
- आओं नदियों को जोड़े

भारतीय जैन मिलन
प्रकाश जी पाटनी-प्रदेश अध्यक्ष • अशोक जी बाफना-महामंत्री
परम संरक्षक : मनीष बैद, राकेश गोदिका
विनोद जी कोटखावदा, सुनील जी पहाड़िया

महेन्द्र जी सिंघवी
: विशिष्ट अतिथि :

डॉ. राजीव जैन

अनिल अनिता जैन
प्रोजेक्ट डायरेक्टर

निर्मल जी सोगानी
: विशिष्ट अतिथि :

पीयूष सोनी जैन
समाजसेवी

चित्रकला प्रतियोगिता से संबंधित महत्वपूर्ण नियम :
- चित्र का न्यूनतम 20 शब्दों में अभिप्राय (कोटेशन) लिखना अनिवार्य है।
- प्रतियोगी को किसी भी एक विषय पर चित्र बनाना है।
- सभी प्रतियोगिता को पोस्टर कलर एवं ब्रश साथ में लाना है।
- प्रतियोगियों को ड्राईग शीट प्रतियोगिता स्थल पर नि:शुल्क दी जायेगी।
- सभी प्रतियोगियों को सर्टिफिकेट दिये जायेंगे।
- प्रतियोगिता में तीनों श्रेणियों में प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार मंदिर स्तर पर दिये जायेंगे।
- सभी प्रतियोगियों में से तीनों श्रेणियों में प्रथम व द्वितीय पुरस्कार जयपुर स्तर पर दिये जायेंगे।

चित्रकला प्रतियोगिता नीचे दिये गये विभिन्न जैन मंदिरों में आयोजित की जायेगी

क्र.	मंदिर का नाम	अध्यक्ष	मंत्री	संयोजक
1.	श्री चंद्र प्रभु दिगंबर जैन मंदिर बरकत नगर	चक्रेश जी जैन	निर्मल जी जैन	अनिता जैन, शशि जैन
2.	श्री दिगंबर जैन मंदिर कीर्ति नगर	टीकम जी बिलाला	जगदीश जी जैन	विनीत गोदीका, विमल गंगवाल
3.	श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर मधुवन कॉलोनी	अनिल जी टोंगया	अनिल जी छाबड़ा	नेमीजी छाबड़ा
4.	श्री दिगंबर जैन मंदिर जनकपुरी	पदम जी बिलाला	देवेंद्र जी कासलीवाल	अनुश्री जैन, नेहा जैन, अमित शाह
5.	श्री दिगंबर जैन मंदिर महेश नगर	पदमचंद जी जैन	पीयूष जी जैन	प्रिया जैन, अंजू जैन
6.	श्री दिगंबर जैन मंदिर शक्तिनगर	शिखर चंद जैन	पारस जैन	पूजा जैन, अंकिता बिलाला
7.	श्री दिगंबर जैन मंदिर गायत्री नगर	कैलाश जी छाबड़ा	राकेश जी बोहरा	प्रीति सोगानी, सुनीला बाकलीवाल
8.	श्री दिगंबर जैन मंदिर दुर्गापुरा	प्रकाश जी चांदवाड़	राजेंद्र जी काला	चंदा सेठी, जय कुमार जी
9.	श्री दिगंबर जैन मंदिर महावीर नगर	अनिल जैन	सुनील बज	पूर्णिमा छाबड़ा जैन, बरखा जैन
10.	श्री दिगंबर जैन मंदिर सेक्टर 10 मालवीय नगर	हरक चंद जी लुहाड़िया	अनिल बड़जात्या	डिंपल जैन, कल्पना जैन
11.	श्री दिगंबर जैन मंदिर सेक्टर 3 मालवीय नगर	सी एल जैन	ज्ञानचंद जैन	दिनेश पाटनी, राजकुमार गोधा
12.	श्री दिगंबर जैन मंदिर सेक्टर 7 मालवीय नगर	गिरीश जैन	संजय जैन	सुमित्रा छाबड़ा, रश्मि छाबड़ा
13.	श्री चंद्र प्रभु दिगंबर जैन मंदिर श्योपुर	बाबूलाल पाटनी	प्रदीप जैन	विनीता अजमेरा, रसना जैन
14.	श्री दिगंबर जैन मंदिर मंगल विहार	प्रमिला जी जैन	अमित गोधा	रीमा शाह, परिधि जैन
15.	श्रीदिगंबर जैन मंदिर शांति नगर	नरेंद्र जी बड़जात्या	विक्रांत जी अजमेरा	अरुणा जी छाबड़ा, विभा जैन
16.	श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर 23 दिन वाला	विनय जी लुहाड़िया	विमल जी बाकलीवाल	अनीता बारदार, प्रिया जैन
17.	श्री दिगंबर जैन मंदिर वरुण पथ मानसरोवर	महावीर प्रसाद जैन	जे.के. जैन	प्रेरणा लुहाड़िया, मिथिलेश काला
18.	श्री दिगंबर जैन मंदिर मीरा मार्ग मानसरोवर	सुशील पहाड़िया	राजेंद्र सेठी	रतन सोगानी, रानी पाटनी
19.	श्री दिगंबर जैन मंदिर मानसरोवर	राजेश काला	सौभाग मल	उर्मिला पाटनी, वीरेंद्र जी गदिया
20.	श्री दिगंबर जैन मंदिर थड़ी मार्केट मानसरोवर	पवन जैन	अनिल जी बाकलीवाल	पंकज जी लुहाड़िया, मीनाक्षी जैन
21.	श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर जय जवान कॉलोनी	………	………	कृति शाह, पारूल शाह
22.	श्री दिगंबर जैन मंदिर लाल कोठी	निहालचंद सोगानी	प्रदीप जैन छाबड़ा	खुशबू कासलीवाल, मंजू लता छाबड़ा
23.	श्री दिगंबर जैन मंदिर दूदू	विमल जी छाबड़ा	राजेश जी बोहरा	नीता बोहरा, रीना बड़जात्या
24.	श्री दिगंबर जैन मंदिर श्याम नगर	प्रदीप जी चूड़ीवाल	पारस जी गंगवाल	कल्पना जैन, निर्मला जी चूड़ीवाल
25.	श्री दिगंबर जैन मंदिर मोहनबाड़ी	राजेंद्र बिलाला	नरेंद्र जी बाकलीवाल	विनीता सोगानी, सुषमा जैन
26.	श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर चोमू बाग	प्रेम जी जैन	पारस जी जैन	दीपशिखा अजमेरा, सरोज सोगानी
27.	श्री दिगंबर जैन मंदिर चित्रकूट सांगानेर	केवल चंद जी गंगवाल	अनिल जी जैन काशीपुर	राजेश चौधरी, अंजना जैन
28.	श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर पारस विहार मुहाना	पवन कुमार जैन	प्रमोद जी बाकलीवाल	रुचि गोदीका, नीतू जैन
29.	श्री दिगंबर जैन मंदिर निर्माण नगर	चंदनमल जी जैन	पदमचंद जी गंगवाल	सुनीता जैन, राजरानी जैन
30.	श्री दिगंबर जैन मंदिर राधा निकुंज	कैलाश जी जैन	विजय जी जैन	हेमंत बड़जात्या, मनीषा जैन
31.	श्री दिगंबर जैन मंदिर सेक्टर 5 प्रताप नगर	जेके जैन	प्रमोद जी जैन	ममता जी सेठी, निर्मला जी जैन
32.	श्री दिगंबर जैन मंदिर बज की नसियां	………	………	निकिता सोगानी, सुशीला जी
33.	श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर झोटवाड़ा	धीरज जी पाटनी	दिनेश जी काला	रीना बिंदायका, सुमन बड़जात्या
34.	श्री चंद्र प्रभु दिगंबर जैन मंदिर झोटवाड़ा	फूलचंद जैन	रवि जैन	अवधि जैन, रूचिका जैन
35.	श्री दिगम्बर जैन मंदिर शास्त्री नगर	पवन जी पाटनी	जिनेश जी छाबड़ा	प्रदीप जी काला, विजय जी जैन
36.	श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर मुरलीपुरा स्कीम	धर्मचंद जी जैन	नीरज जी जैन	टीना जी जैन, निकिता अजमेरा
37.	श्री दिगंबर जैन मंदिर सेक्टर 1 विद्याधर नगर	विरधीचंद जी जैन	पारस चंद जी जैन	मोना जैन, पूनम जैन
38.	श्री दिगंबर जैन मंदिर सेक्टर 8 विद्याधर नगर	प्रेमचंद जी ठीकरिया	रोशन लाल जी सेठी	मंजू गोधा, पूनम जैन
39.	श्री दिगंबर जैन मंदिर अंबाबाड़ी	टीकमचंद जी सेठी	सुरेश जी जैन	रजनी सेठी, पायल काला
40.	श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर वैशाली नगर	गजेंद्र जी बड़जात्या	प्रमोद जी बोहरा	आरती जैन, मीना जैन
41.	श्री दिगंबर जैन मंदिर कमला नेहरू नगर	विजय कुमार जी जैन	अरूण जी सोनी	कमलेश जैन, वीना जैन
42.	श्री दिगंबर जैन मंदिर पद्मावती कॉलोनी	मांगीलाल जी जैन	कमल जी जैन	विमला जी जैन ठोलिया, मेघा जी झांझरी
43.	श्री भगवान महावीर कैंसर हॉस्पिटल (कैंसर केयर ट्रीप फाउंडेशन)	अनिला जी कोठारी	सुनीता जी काला	शिल्पा जी कोठारी, विमला जी ठोलिया
44.	श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर विवेक विहार	अनिल जी जैन, (IRS)	सुरेन्द्र जी पाटनी	अल्का जी जैन, सरला जी बगड़ा
45.	श्री दिगंबर जैन संघी जी मंदिर सांगानेर	महावीर बज	नरेंद्र जी पांड्या	विजय बज, संजय छाबड़ा
46.	श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर मैन मार्केट जगतपुरा	कमल जी वैद	प्रमोद जी जैन	विनोद जी पापड़ीवाल, प्रीति गोधा
47.	श्री केसरिया पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर केसर चौराहा	महावीर जी कासलीवाल	नरेश जी जैन	हेमंत जी जैन, कमलेश जी जैन
48.	श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर महात्मा गांधी नगर अजमेर रोड	कैलाश जी लुहाड़िया	सुनील जी जैन	पंकज जी जैन, अमित जी गदिया
49.	श्री दिगंबर जैन मंदिर महल योजना जगतपुरा	मुकेश संघी	अनूपचंद जी जैन	अभिषेक संघी, धीरेंद्र जैन
50.	श्री दिगंबर जैन मंदिर सोनियान ख्वास जी का रास्ता हवा महल	कमल जी दीवान	संजय जी गोधा	संतोष जी छाबड़ा, मनीष जी जैन
51.	श्री दिगंबर जैन मंदिर जोबनेर	प्रवीण जैन	आशीष ठोलिया	सुनीता बड़जात्या, विनोद बड़जात्या

अनिल जैन अध्यक्ष, **तरूण जैन** सचिव — भारतीय जैन मिलन जयपुर
मनीष झांझरी अध्यक्ष, **पवन जैन** सचिव — राजस्थान जैन ऑर्गेनाईजेशन
अनिल जैन अध्यक्ष, **तरूण जैन** सचिव — श्री भारतवर्षीय दि. जैन युवा महासभा जि. जयपुर
पूनम तिलक अध्यक्ष, **अनिता जैन** सचिव — भारतीय जैन मिलन महिला विंग जयपुर

मुख्य संयोजक: डॉ. राजीव जैन, सुनिता जैन
संयोजक: राजेश काला, सुशील कासलीवाल, विमलेश राणा, रवि जैन, राजेश चौधरी, विनीत छाबड़ा, धन कुमार जैन, प्रमोद जैन भंवर, राजकुमार पाटनी, मुकेश कासलीवाल, जितेश जैन, अनिल रांवका

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता संपन्न

रावतसर. शाबाश इंडिया

स्थानीय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में समग्र शिक्षा अभियान की ओर से समग्र शिक्षा योजना के तहत मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी हंसराज जाजेवाल की अध्यक्षता में जिले के विशेष आवश्यकता वाले बालक बालिकाओं की जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता आज संपन्न हुई। प्रतियोगिता में जिले के 122 बच्चों अभिभवकों ने भाग लिया। सहायक परियोजना समन्वयक पुरुषोत्तम दास शर्मा ने कहा कि इन दिव्यांग बच्चों में बहुत प्रतिभा छिपी हुई है जरूरत उनको निखारने की है। दुलीचंद शर्मा मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ने कहा कि इन बच्चों को अगर समय पर सम्बलन मिले तो वह किसी से पीछे नहीं रहेंगे। एसीबीईओ मुकेश कुमार सोनी ने बच्चों को प्रशंसा स्वरूप अभिवादन कर इनका मनोबल बढ़ाया, बाल कल्याण समिति के चेयरमैन जितेंद्र गोयल ने कहा कि इन बच्चों से अपने को विशेष लगाव रखना चाहिए ! वार्ड पार्षद भगवती प्रसाद ने भी बच्चों की प्रशंशा की , इस खेल कूद गतिविधि में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं जैसे जलेबी दौड़, कुर्सी दौड़, चम्मच दौड़, एकल गायन सामूहिक गायन, रस्साकसी, चम्मच दौड़, ब्रेल पठन लेखन, ब्लाइंड चेस , गुबारा फोड़ प्रतियोगिता, ट्राई साइकिल दौड़ हुई जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय को पुरस्कृत किया गया साथ ही सभी भाग लेने वाले बच्चों को भी सांत्वना पुरस्कार दिया गया। प्रतियोगिता में कार्यक्रम अधिकारी किरण बाला, डीसी सतीश वर्मा, भागमल सैनी , भगवानदास, राहुल, रवि कौशिक,ज्योति, तनीषा, सुमन, पंकज सहित अन्य विशेष शिक्षको ने भाग लिया। आरपी कुलदीप कुमार, दिनेश सैनी का कार्यक्रम व्यवस्था में विशेष योगदान रहा, कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाचार्य सत्यदेव राठौड़ ने सभी का आभार प्रकट किया व प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए सभी की प्रशंसा की।

67वीं जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता सेम स्कूल ने जीता सोना

नीमकाथाना. शाबाश इंडिया। 67 जिला स्तरीय 14 वर्ष हैंडबॉल प्रतियोगिता का आयोजन वरदा स्कूल नीमकाथाना में किया गया जिसमें नीमकाथाना जिले की सेम स्कूल राजस्थान स्पोर्ट्स अकादमी के छात्र छात्राओं ने अपनी खेल प्रतिभा के दम पर छात्र वर्ग में गोल्ड मेडल प्राप्त किया तथा छात्रा वर्ग में सिल्वर मेडल प्राप्त किया. टीम प्रभारी हेमेश सैन ने बताया कि दोनों टीमों के 8 छात्र-छात्राओं का राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में नीमकाथाना का प्रतिनिधित्व करेंगे इस अवसर साथ में कोच सुनिल सैनी भी मौजूद रहे ।

जैन तीर्थ नैनागिरि को मिला संतशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का मंगल आशीर्वाद

रत्नेश जैन बकस्वाहा. शाबाश इंडिया

डोंगरगढ़ (चंद्रगिरि)। श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र चंद्रगिरि (डोंगरगढ़) छत्तीसगढ़ में पावन वर्षायोग में विराजमान परमपूज्य राष्ट्रसंत , संतशिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज ससंघ के श्री चरणों में श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र (रेशंदीगिरि) नैनागिरि जी की कमेटी ने बुधवार 13 सितम्बर को श्रीफल अर्पित करते हुए नैनागिरि तीर्थ क्षेत्र की प्रगति, समवशरण रचना , पार्श्वनाथ देशना स्थली के विशाल भव्य मंदिर व मनोज्ञ जिनबिम्बों तथा देश के अद्वितीय षडखंडागम श्रुत मंदिर आदि के संबंध में संक्षिप्त जानकारी देते हुए आगामी दिनांक 04 दिसंबर से 10 दिसंबर 2023 तक विविध कार्यक्रम के साथ होने जा रहे पंचकल्याणक महोत्सव हेतु मंगल आशीष हेतु निवेदन किया, परम पूज्य आचार्य श्री ने मुस्कुराते हुए दोनों हाथों से मंगल आशीर्वाद प्रदान किया, इसके साथ ही आचार्य श्री ने नैनागिरि पदार्पण हेतु भी आशीर्वाद दिया । साथ ही संघस्थ मुनि श्री प्रसाद सागर जी महाराज, श्री निरामय सागर जी महाराज, मुनि श्री चंद्र सागर जी महाराज को क्षेत्र की जानकारी विस्तार पूर्वक देते हुए मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया । नैनागिरि ट्रस्ट कमेटी के मंत्री राजेश रागी, प्रबंध समिति के मंत्री देवेन्द्र लुहारी, उपाध्यक्ष सुखानंद शाह, संयुक्त मंत्री वीरेन्द्र सिंघई, उप मंत्री सुरेश चंद्र गूगरा आदि शामिल रहे ।

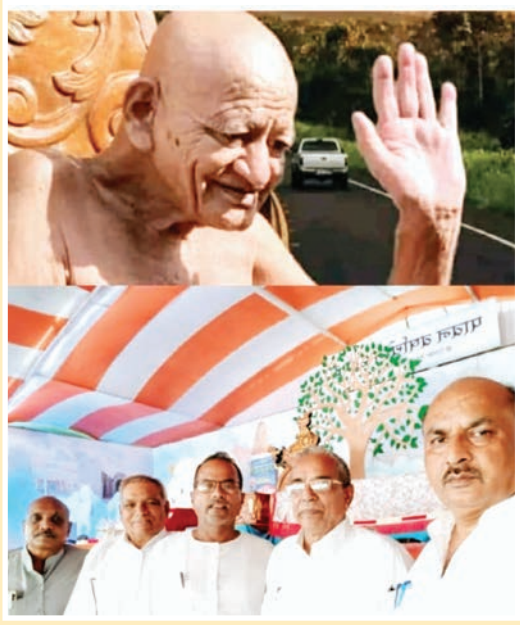

निर्यापक मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने कहा...

अपने से छोटों के लिए कमाना नौकरी है और अपने से बड़ो के लिए कमाना पूजा है

आगरा. शाबाश इंडिया

आगरा के हरीपर्वत स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर के अमृत सुधा सभागार में निर्यापक मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने मंगल प्रवचन को संबोधित करते हुए कहा कि कुछ यह व्यक्ति स्वयं उपादान से कमाता है कुछ यश ऐसे होते है जो निमित्त के आधीन होते है। आत्म कल्याणी सुख जो होता है वह उपादान के कमाए हुए यश से होता है, गुणों से प्रकट होता है और उस गुणों को जैसे जैसे प्रकट होता जाता है वैसे वैसे आनंद बढ़ता जाता है। उसे कोई छीन नही सकता है, उसे कोई गौण नही कर सकता वो हमारी स्वयं की संपदा है। इसी की प्रसंशा पूज्य कुन्दकुन्द भगवान ने अपने अध्यात्म ग्रंथों में की है कि यदि तुम अपने दृष्टि में ऊपर उठना चाहते हो तो अपने पर दृष्टि रखो। यदि तुम निर्दोष होना चाहते हो तो अपनी निर्दोषता पर विचार करो, उसी का मनन करो, उसी का आचरण करो वही तुम्हारी आत्मा की संपदा होगी। दुनिया से मत पूछो कि मैं कैसा हूँ, तुम अपने आप से निर्णय करो कि मैं कैसा हूँ। जब व्यक्ति अपनी निर्दोषता दुसरो के आधीन रखता है बस समझ लेना चाहिए वह सबसे बड़ा बेईमान है। पहले अपनी आपकी दृष्टि में बताओ तुम क्या हो, यदि अच्छे हो तो आनंद लो उस अच्छाई का। ज्ञान एक समय को नही रुकता, कुछ न कुछ जानता ही है। अब उसे क्या जानना है ये निर्णय ज्ञान का नही है। ज्ञान में आनंद नही है ज्ञाता में आनंद है, धन में आनंद नही है, धनी में आनंद है, धन तो सबसे ज्यादा बैंक मैनेजर के पास होता है लेकिन उसको नौकरी का आनंद आता है, धनी का नही। धन पा लेने के बाद भी धन का आनंद नही आ रहा है क्यों हमने धन तो पा लिया लेकिन धनी नही बन पाए। जो भविष्य जानने की रुचि

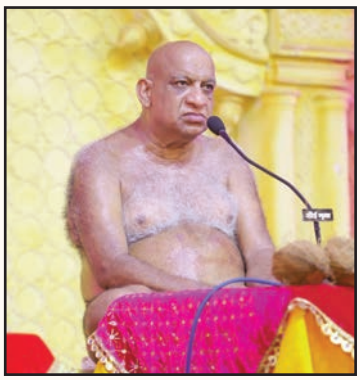

रखते है वो ही सबसे ज्यादा टेंशन का कारण बनता है, अरे कल मरेंगे तो मरेंगे, आज तो जिंदा का आनंद लो न। आज का दिन सुखमय है तो कल का दिन भी सुखमय ही होगा। आज का दिन तीनो कालो को शुद्ध करता है। वर्तमान में जो अपनी दशा है इसका निर्णय मिलता है कि अतीत में हम क्या थे। वर्तमान बता रहा है हम दुखी है हमने अतीत में कुछ खोटा किया है। *वर्तमान अतीत का प्रमाणपत्र है और भविष्य का घोषणा पत्र है। वर्तमान में तुम दुखी हो मतलब अतीत के तुम गलत आदमी थे। जिस जिस चीज से अपन परेशान है, वो वो खोट अपने मे थी और वर्तमान में जो हम कर रहे है भविष्य का घोषणा पत्र है।ध्वजा मन्दिर की पहचान है मन्दिर नही इसी तरह ज्ञान आत्मा की पहचान है स्वभाव नही, स्वभाव है हमारा ज्ञाता,ज्ञायकपना। जैन परिवार नियोजन की बात अरे असम्भव असंभव,असंभव। या तो पूर्व भव का पापी है या आगे होने वाला है। हो नही सकता,क्यों कराये क्योंकि जैनी के यहाँ जितने बच्चे जन्मेगे देश का उद्धार,समाज का उद्धार,धर्म का उद्धार,शाकाहारी बनेगा,भगवान का भक्त बनेगा, दीक्षा ले लेगा,व्रत ले लेगा। अरे परिवार नियोजन वो कराये जिनके कुल, जिनकी जाति, जिनके लोग पापी है, मांसाहारी है क्योंकि जितने पैदा होंगे उतना मांसाहार बढ़ेगा। कोई शराबी, जुआरी, नीचकुल,जिनके अंधे काम होते है, डाकू-डकैत आदि है ये यदि परिवार नियोजन कराते है तो ठीक है क्योंकि डाकुओं के डाकू ही पैदा होंगे, मांसाहारी के मांसाहारी पैदा होंगे। 99% बच्चो में अपने कुल और परिवार का संस्कार आता है। तुमने एक बेटे को नही रोका है एक बेटे की हत्या नही की है एक मुनि की, बिटिया की है तो एक आर्यिका की,प्रतिमाधारी व्रती की, एक भगवान के भक्त की और एक शाकाहारी की हत्या की है। पशुओ और मनुष्यों में इतना ही अन्तर है, बच्चो के लिए तो पशु भी पालता है लेकिन वो अपने माँ-बाप की सेवा नही करता है और मनुष्य बच्चो को भी पालता है और माँ-बाप की भी सेवा करता है। जो जो व्यक्ति बड़े होने के बाद माँ-बाप को छोड़ देते है, अलग हो जाते है या अलग कर देते है ये पशुओ में से आये है या पशुओ में जाने की तैयारी है क्योंकि जन्म लेने के बाद मात्र पशुओ पक्षियों में ये व्यवस्था है। जन्म लेने के बाद उसकी सुरक्षा की और बड़े होने के बाद भूल जाते है कि मेरे मम्मी पापा कौन है। और मनुष्य के लिए सबसे बड़ा गुण है कि माँ-बाप को कभी भूलता नही है मरण के बाद भी वो दीपक जलाता है। जिससे जन्म ले लिया हो, दूध पिया हो माँ का, पिता से तुम्हारा पालन करके पैर पर खड़े हो गए हो तो चाहे कैसा भी दुष्ट क्यों न हो उसको छोड़ना नही, उसको भूलना नही,उसी के लिए जीना है, उसी के लिए कमाना है सब कुछ तुम्हारा उसी के लिए है तो जाओ एक दिन तुम साक्षात तीर्थंकर जैसे पिता को पाओगे और उनकी गोदी में खेलोगे। तुम माँ-बाप के लिए जियो, सबकुछ पूज्य पुरुषों के लिए। अपने से छोटो के लिए कमाना नौकरी है और अपने से बड़ो के लिए कमाना पूजा है।

शुभम जैन, मीडिया प्रभारी

विश्वकर्मा जयपुर में राजपूत समाज की बैठक में सामाजिक, शैक्षणिक व राजनेतिक गतिविधियों पर हुई चर्चा

जयपुर. शाबाश इंडिया

सीकर रोड स्थित सरस्वती बाल सीनियर सेकेंडरी स्कूल उद्योग विहार प्रांगण में राजपूत सभा जयपुर महानगर के तत्वावधान में विश्वकर्मा क्षेत्र के समाज बंधुओ व वार्ड इकाई पदाधिकारीगण की उपस्थिति में राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई के मुख्य अतिथि में व राजपूत सभा जयपुर महानगर के अध्यक्ष गणपत सिंह राठौड की अध्यक्षता में सामाजिक, शैक्षणिक व राजनीतिक गतिविधियों पर चर्चा की गई। अध्यक्ष राम सिंह चन्दलाई ने राजपूत सभा भवन के कार्यों व गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि कई क्षेत्रों में समाज की बड़ी आबादी के बावजूद समाज को उचित राजनीतिक प्रतिनिधित्व राष्ट्रीयकृत दलों द्वारा नहीं दिया जाता है। राजपूत सभा महानगर के अध्यक्ष गणपत सिंह राठौड़ ने बताया कि समाज सुधार के तहत सामाजिक कुरीतियों व फिजूलखर्चो को खत्म करने, महिला शिक्षा, स्वरोजगार, संस्कार, सत प्रतिशत मतदान करने हेतु प्रेरित करने व सामाजिक संगठनो को मजबूत बनाने की आवश्यकता है। तभी समाज का विकास में समाज जागृत होगा। इस तरह की चर्चा के लिए शीघ्र ही जयपुर के सात विधान सभा क्षेत्रवार समाज की बैठकों का लगातार आयोजन किया जाएगा। केंद्रीय सभा के अध्यक्ष प्रताप सिंह ,सहसचिव मोहन सिंह, कार्यकारिणी सदस्य सुरेंद्र सिंह व जितेंद्र सिंह, महानगर उपाध्यक्ष रघुवीर सिंह, महामंत्री फतेह सिंह, कोषाध्यक्ष प्रताप सिंह ,सहसचिव नरेंद्र सिंह, कार्यकारिणी सदस्य अशोक सिंह, जितेंद्र सिंह, जगमोहन सिंह, वार्ड नंबर 4 अध्यक्ष शंकर सिंह महामंत्री कुलदीप सिंह, आयुवान सिंह, दशरथ सिंह ,ओंकार सिंह डावरा, प्रहलाद सिंह ,लक्ष्मण सिंह, शंभू सिंह, बलवीर सिंह दयाल सिंह सहित भारी संख्या में प्रबुद्धजन व मातृ शक्ति उपस्थित थे। मंच का संचालन प्रताप सिंह शेखावत ने किया।

शेखावाटी विकास परिषद में भागवत कथा

जीवन की मूलभूत आवशकताएं शांति, भक्ति और मुक्तिः संतश्री हरिशरण

जयपुर. शाबाश इंडिया। विद्याधर नगर स्थित शेखावाटी विकास परिषद में चल रही श्रीमद् भागवत कथा में गुरुवार को संत श्री हरिषरण जी महाराज ने कहा कि नारायण हरि मनुष्य जब अपनी वास्तविक आवश्यकता का अनुभव करता है तब उसे अपने लक्ष्य का भी ज्ञान हो जाता है। जैसे मुझे शांति चाहिए,मुक्ति और भक्ति चाहिए। यह मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। उन्होंने आगे कहा कि मानव को अपनी-अपनी आवश्यकता का अनुभव करना चाहिए। मुझे शांति चाहिए,विश्राम चाहिए,प्रेम चाहिए व अमरता जीवन में चाहिए। ऐसी आवश्यकता का अनुभव होने पर इसकी प्राप्ति मंगलमय विधान से स्वतंत्र होने लगती है इसी का नाम कल्याण है। कपिल देवहुति सवांद पर प्रकाश डालते हुए महाराजश्री ने कहा कि देवहूति जी ने पति कर्दम के वन की ओर चले जाने पर पुत्र कपिल के पास आई और प्रार्थना करते हुए बोली कि हे प्रभु हमें संसार के बंधन से मुक्त होने का मार्ग प्रदान करें। मां देवहूति की प्रार्थना को भगवान कपिल ने तत्क्षण स्वीकार किया और ऐसा उपदेश प्रदान किया कि देवहूति जी संसार सागर से मुक्त होकर सिद्धिरा नाम की नदी के रूप में परिणित होकर मुक्त हो गई। आगे सती चरित्र पर महाराज श्री ने विस्तार से श्रोताओं को श्रवण कराया जिससे कथा प्रांगण का वातावरण शिव मय हो गया। परम भक्त ध्रुव जी के चरित्र पर व्याख्यान देते हुए उन्होने कहा कि मात्र पांच वर्ष की अवस्था में ध्रुव को दर्शन देकर अखंड राज्य प्रदान करते हुए उनके लिये ध्रुव लोक का निर्माण में कर दिया। महाराज श्री ने कहा कि प्रभु के दर्शन के लिए व्यक्ति को सत्संग सेवा सुमिरन में हमेशा लीन रहना चाहिए और अपने को मानव बनाने का प्रयत्न करो तुम यदि इसमें सफल हो गए तो तुम्हे इस कार्य में सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होगी। कुसंगति की अपेक्षा अकेले रहना सबसे उत्तम कार्य है। प्रवक्ता रामानंद मोदी ने बताया कि कथा 21 सितम्बर तक रोजाना दोपहर 2.30 बजे से शाम 7बजे तक होगी।

आत्मा में रमण करने पर खुल जाते हमारे लिए मोक्ष के द्वार-समीक्षाप्रभाजी म.सा.

हमारे पास हर कार्य के लिए वक्त पर धर्म के लिए समय नहीं। रूप रजत विहार में महासाध्वी इन्दुप्रभाजी के सानिध्य में पर्युषण पर्व की आराधना जारी

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। संसार में तनाव ही तनाव है लेकिन जो आत्मा में रमण कर लेता है उसके लिए मोक्ष के द्वार खुल जाते है। अच्छे कर्म करने के साथ जिनवाणी पर श्रद्धा रखना है। शरीर के लिए भोजन आत्मा के लिए धर्म जरूरी है। बिना धर्म ध्यान के आत्मकल्याण नहीं हो सकता। हमारे जीवन में कितनी भी व्यस्तता हो पर यदि उसमें धर्म नहीं है तो वह कभी सार्थक नहीं हो पाएगा। ये विचार भीलवाड़ा के चन्द्रशेखर आजादनगर स्थित रूप रजत विहार में बुधवार को मरूधरा मणि महासाध्वी श्रीजैनमतिजी म.सा. की सुशिष्या महासाध्वी इन्दुप्रभाजी म.सा. के सानिध्य में तत्वचिंतिका साध्वी समीक्षाप्रभाजी म.सा. ने पर्वाधिराज पर्युषण के तीसरे दिन ह्यह्यव्यस्त जीवन में धर्म कैसे करेंह्लह्ल विषय पर प्रवचन के दौरान व्यक्त किए। प्रवचन के शुरू में अंतगड़ सूत्र का वांचन आगम मर्मज्ञा डॉ. चेतनाश्रीजी म.सा. ने किया। प्रवचन में समीक्षाप्रभाजी म.सा. ने कहा कि धर्म ओर कुछ नहीं वस्तु का स्वभाव है। पानी का स्वभाव शीतलता, अग्नि का स्वभाव गर्म ओर आत्मा का स्वभाव शांति,क्षमा, मैत्री, करूणा, प्रेम, सरलता, समभाव आदि है। आत्मा का अपने मूल गुणों में रहना ही धर्म है। आत्मा अपने स्वभाव को भूल विभाव में जा रही है। तप, त्याग, साधना आत्मा को अपने मूल गुण में लाने का माध्यम है। क्रोध, राग, द्वेष, तेरा-मेरा की भावना ये सभी विभाव है। साध्वीश्री ने कहा कि जिसके मोहनीय कर्म होते है वहीं हंसता-रोता रहता है जिसके यह कर्म क्षय हो जाता है वह इंसान समभाव में रहता है। आत्मा को अपने मूल स्वभाव में लाने के लिए हमे कषाय मुक्त होना होगा। धर्म क्रियाएं आत्मा को उसके मूल स्वभाव में लाने का टॉनिक है। कभी भी ऐसा व्यवहार नहीं करे जिसके कारण कोई हमारे अमंगल की कामना करे ओर बद्दुआ दे।